समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018-19 | अ

जैन विद्या - भाग - 5

(जैन तत्त्व विद्या खण्ड-1)

समय : ½ घण्टा | प्रश्न पत्र : प्रथम | पूर्णांक 30

नोट :- सभी प्रश्नों के अंक समान है। उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।

(A) अ, ब, स, द में से सही उत्तर वाले वर्ण को सामने अंकित कोष्ठक ( ) में भरें।

1. कालू तत्त्व शतक के चार वर्गों में कुल बोल है-
   (अ) 100 (ब) 25
   (स) 101 (द) 50 ( )
2. तीन इन्द्रिय वाले जीवों में पर्याप्तियां होती है-
   (अ) तीन (ब) पाँच
   (स) चार (द) छह ( )
3. सबसे ज्यादा जीव है-
   (अ) देव गति में (ब) मनुष्य गति में
   (स) नरक गति में (द) तिर्यंच गति में ( )
4. परमाणु में स्पर्श होतें हैं-
   (अ) दो (ब) चार
   (स) एक (द) आठ ( )
5. शरीर संरचना की प्रकृष्टता या निकृष्टता का कारण है-
   (अ) अन्तराय कर्म (ब) गौत्र कर्म
   (स) नाम कर्म (द) वेदनीय कर्म ( )
6. एक भव से दूसरे भव में जाते समय जीव जब अनाहारक रहता है उस समय होने वाले योग का नाम है-
   (अ) औदारिक काय योग (ब) कार्मण काय योग
   (स) औदारिक मिश्र काय योग (द) वैक्रिय मिश्र काय योग ( )
7. कल्पातीत देव होते हैं-
   (अ) बारह देव लोक के देव (ब) पांच अनुत्तर विमान के देव
   (स) वग्रैयेयक के देव (द) ब, स दोनों ( )
8. द्वीप कुमार का दण्डक है-
   (अ) चौथा (ब) पांचवा
   (स) छठ्ठा (द) सातवां ( )

9. वेद का अस्तित्त्व है–

(अ) आत्म विकास की 10 वीं भूमिका तक (ब) सातवीं भूमिका तक

(स) नवमी भूमिका तक (द) आठवीं भूमिका तक ( )

10. संमूच्छिम मनुष्यों में इन्द्रियां होती है–

(अ) चार (ब) तीन

(स) पांच (द) साढे तीन ( )

(B) रिक्त स्थान की पूर्ति करें –

(1) व्यवहार शब्द का दूसरा अर्थ है.....।

(2) .....आत्मा की शुद्धावस्था है।

(3) स्त्री, पुरुष, नपुंसक का भेद केवल.....के आधार पर है।

(4) जो जीव मानसिक संवेदन से शून्य होते हैं। वे.....कहलाते हैं।

(5) अकर्म भूमिक मनुष्य.....कहलाते हैं।

(6) जीव का प्रमुख लक्षण.....है।

(7) .....और.....इन दोनों गतियों के जीवों में पारस्परिक संक्रमण नहीं होता।

(8) पढ़मं नाणं तओ दया–पहले.....,फिर.....।

(9) शरीर के द्वारा होने वाला आत्मा का प्रयत्न.....है।

(10) गतिज्ञान ही प्रगाढ़ अवस्था को प्राप्त कर.....बन जाता है।

(C) सही और गलत का चयन (✓) व (✗) का चिन्ह लगावें–

(1) ज्ञानोपयोग भिन्नाकार प्रतीति है। ( )

(2) तिर्यंच गति को प्रशस्त गति माना गया है। ( )

(3) परिहार विशुद्धि चारित्र सातवें और आठवें गुणस्थान में होता है। ( )

(4) मोहनीय कर्म की पच्चीस प्रकृतियां हैं। ( )

(5) संज्वलन चतुष्क से महाव्रतों का अभिघात होता है। ( )

(6) नोकषाय कषाय का ही प्रतिरूप है। ( )

(7) चारित्र का अर्थ है–आत्म संयम। ( )

(8) स्मित से कषाय को सहारा नहीं मिलता। ( )

(9) शरीर वाणी और मन की निवृत्ति का नाम योग है। ( )

(10) स्थावर प्राणियों एवं असन्नी मनुष्य में केवल कामयोग होता है। ( )

समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018-19 **ब**

जैन विद्या - भाग - 5

(जैन तत्त्व विद्या खण्ड-1)

समय : 2½ घण्टे प्रश्न पत्र : प्रथम पूर्णांक 70

नोट :- उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।

(A) निम्न प्रश्नों के उत्तर दें 10×2=20

(1) नो संज्ञी-नो असंज्ञी जीव किसे कहते हैं?

(2) छहों पर्याप्तियों के द्वारा जीव क्या प्राप्त करता हैं?

(3) इन्द्रियों की प्राप्ति का क्रम क्या हैं?

(4) कार्मण काय योग किसे कहते हैं? यह कब होता हैं?

(5) अवधिज्ञानोपयोग क्या है?

(6) आत्मा किसे कहते हैं, ये कितने प्रकार की हैं? नामोल्लेख करें।

(7) आत्म विकास की तीसरी श्रेणी के बारे में बताएं।

(8) मिथ्या दृष्टि गुणस्थान किसे कहते हैं?

(9) औदयिक भाव किसे कहते हैं?

(10) मुक्त में अमुक्त संज्ञा क्या है?

(B) किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें- 10×5=50

(1) क्षायिक भाव-क्षयोपशमिक भाव के अंतर को स्पष्ट करें।

(2) प्रशस्त लेश्या-अप्रशस्त लेश्या के बारे में बताएं।

(3) भव्य-अभव्य की जानकारी दें।

(4) औदारिक का मिश्र कितने प्रकार से हो सकता है?

(5) योग किसे कहते हैं? इसके प्रकार बताएं।

(6) आठ आत्माओं की परिभाषा बताएं।

(7) छठ्ठे, सातवें, आठवें गुणस्थान के बारे में बताएं।

(8) पांच चारित्र की परिभाषा बताएं।

(9) अभिनिवेशिक और सांशयिक मिथ्यातव के बारे में लिखें।

(10) पांच शरीर की परिभाषा बताएं।

(11) चौसठ इन्द्र कौन-कौन से होते हैं?

समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018–19 | अ

जैन विद्या - भाग - 5

(जैन परम्परा का इतिहास)

समय : ½ घण्टा | प्रश्न पत्र : द्वितीय | पूर्णांक 30

नोट :– सभी प्रश्नों के अंक समान है। उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।

(A) अ, ब, स, द में से सही उत्तर वाले वर्ण को सामने अंकित कोष्ठक ( ) में भरें।

1. छट्ठे कुलकर थे–
   (अ) यशस्वी (ब) नाभि
   (स) मरुदेव (द) प्रसेनजित ( )
2. अरिष्टनेमि की माता का नाम था–
   (अ) शिवा रानी (ब) सेना दे रानी
   (स) विजया रानी (द) इनमें कोई नहीं ( )
3. भगवान पार्श्व का तीर्थ प्रवर्तन भगवान महावीर से.....वर्ष पहले हुआ–
   (अ) 200 वर्ष (ब) 2500 वर्ष
   (स) 250 वर्ष (द) 2617 वर्ष ( )
4. जम्बूकुमार को केवलज्ञान प्राप्त हुआ–
   (अ) 28 वर्ष की उम्र में (ब) 30 वर्ष की उम्र में
   (स) 42 वर्ष की उम्र में (द) 36 वर्ष की उम्र में ( )
5. निन्हव तिष्यगुप्त का मत कहलाया–
   (अ) अव्यक्तवाद (ब) जीव प्रादेशिक वाद
   (स) दैक्रियवाद (द) अविद्धिक वाद ( )
6. सुषम–दुःषमा आरे की काल मर्यादा थी–
   (अ) चार कोटा कोटि सागर (ब) दो कोटा कोटि सागर
   (स) तीन कोटा कोटि सागर (द) बयांलिस हजार वर्ष ( )
7. गणधर मंडितपुत्र को संदेह था–
   (अ) देव है या नहीं (ब) बंध मोक्ष है या नहीं
   (स) नरक है या नहीं (द) कर्म है या नहीं ( )
8. भगवान महावीर को केवलज्ञान प्राप्त हुआ–
   (अ) साधना के 10 वें वर्ष में (ब) साधना के 11 वें वर्ष में
   (स) साधना के 13 वें वर्ष में (द) साधना के नवमें वर्ष में ( )

9. रामकृष्ण परमहंस के संप्रदाय में सिर्फ एक स्त्री थी। उनका नाम था?
(अ) शारदा देवी (ब) समता देवी
(स) कल्याणी देवी (द) उज्जवला देवी ( )

10. विक्षेपवाद संघ के आचार्य थे–
(अ) पूरण कश्यप (ब) पकुप कात्यापन
(स) अजित केश कंबली (द) संजयवेल द्वि पुत्र ( )

(B) रिक्त स्थान की पूर्ति करें –

(1) .....और.....ये दोनों अध्यात्म के प्रकाश स्तंभ है।

(2) आध्यात्मिक जगत का साध्य है.....।

(3) आचार्य वाग्भट्ट ने.....का निर्माण किया।

(4) चामुण्डराय का घरेलू नाम.....था।

(5) श्रवण बेलगोला में लगभग.....शिलालेख है।

(6) उपासक धरणाशाह ने स्वप्न में.....विमान देखा।

(7) सम्राट अशोक का पुत्र.....जैन धर्मावलम्बी था।

(8) दिगम्बर परम्परा में भाद्र शुक्ला पंचमी से 14 तक..... पर्व मनाया जाता है।

(9) जैन आगमों की भाषा.....है।

(10) आचार्य सिद्ध सेन को महाराज.....बहुत सम्मान देते थे।

(C) सही और गलत का चयन (✓) व (✗) का चिन्ह लगावें–

(1) आगमों के प्रथम संस्कृत टीकाकार हरिभद्रसूरि है। ( )

(2) वृहद्कल्प लघु भाष्य आचार्य जिनभद्रगणी की रचना है। ( )

(3) अश्वमित्र का मत सामुच्छेदिकवाद कहलाया। ( )

(4) जम्बू स्वामी के पश्चात बारह वस्तुओं का लोप माना गया है। ( )

(5) तीर्थंकर वाणी जैन संघ के लिए सर्वोपरि प्रमाण है। ( )

(6) आचार्य प्रभव महावीर की शासन परंपरा के पांचवें पट्टधर थे। ( )

(7) जैन परम्परा के अनुसार चातुर्याम धर्म के प्रथम प्रवर्तक भगवान अजित नाथ है। ( )

(8) दुषम–सुषमा पूरा होने में 72 वर्ष 11 महिने 7 दिन बाकी थे तब भगवान महावीर का जन्म हुआ। ( )

(9) भगवान का दृष्टि संयम अनुत्तर था। ( )

(10) भगवान के 14 हजार साधु 38 हजार साध्वियां थी। ( )

समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018–19 **ब**

जैन विद्या - भाग - 5

(जैन परम्परा का इतिहास)

समय : 2½ घण्टे प्रश्न पत्र : द्वितीय पूर्णांक 70

नोट :- उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।

(A) निम्न प्रश्नों के उत्तर दें 10×2=20

(1) तमिलनाडु में जैन धर्म के ह्रास के क्या कारण थे?

(2) आचार्य कुन्दकुन्द के कितने और कौन–कौन से नाम थे?

(3) सम्मेद शिखर के बारे में लिखें।

(4) मौर्य और शुंग–काल के पश्चात भारतीय मूर्तिकला की मुख्य धाराएं क्या है?

(5) भगवान महावीर ने परम आत्मा की पांच कक्षाएं निर्धारित की, वे क्या है?

(6) दिगम्बर परम्परा के बारे में बताएं।

(7) बारह अंगों का नामोल्लेख करें।

(8) सम्राट भरत को वैराग्य कैसे हुआ?

(9) अक्रियावाद की जानकारी दें।

(10) भगवान महावीर के समय श्रमणों के पांच प्रभावशाली सम्प्रदाय कौन–कौन से थे?

(B) किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर दें– 10×5=50

(1) आचार्य अकलंक का संक्षिप्त परिचय दें।

(2) महाराज खाखेल के बारे में लिखें।

(3) जैन चित्रकला के बारे में टिप्पणी लिखें।

(4) आगमों की रचना क्रम की जानकारी दें।

(5) 'त्रैराशिकवाद' के बारे में लिखें।

(6) आर्य जम्बू कुमार के बारे में लिखिये।

(7) श्रावक के मुख्य गुणों के बारे में लिखें।

(8) तेरापंथ में राजस्थानी साहित्य का क्या विकास हुआ? टिप्पणी लिखें।

(9) भगवान ने श्रमण संघ की क्या व्यवस्था की?

(10) भरत अनासक्त योगी थे। स्पष्ट करें।

(11) जैन पर्वों के बारे में लिखें।